अंधेरा जा रहा है

डॉ0 रमेश पोखरियाल 'निशंक'

अपनी बात

कुँवारी संवेदनाओं की सान्द्र अनुभूतियाँ जब-जब मानस को उद्वेलित करती हैं तो सृजनधर्मी रचनाकार अपनी भावनाओं को कविता का आकार देता है, यह आकृति उसकी संपूर्ण सृजन यात्रा का ताना-बाना होती है, यों भी रचनाकार अपने सृजन को सन्तति के समान पालता-पोषता है, यह पोषण उसकी आत्मा को परितोष भी देता है और एक शिखर तक आनन्दित भी करता है।

कविता का अपना परिदृश्य है; अपने नवीन संदर्भ हैं। इसी वृहद् आकृति से जब छोटी-छोटी अनुभूतियाँ या कहें नई कोंपलें भी बोलने का प्रयास करती हैं तो साहित्यिक भाषा में हम उन्हें क्षणिकाएं कहते हैं। ये किसी मासूम बालक की कोमल भावना के समान भी होती है तो साथ ही इनमें अचूक संप्रेषणीयता की सामर्थ्य भी रहती है, यानि एक समय में अपनी बात को पूरी शिद्दत से अभिव्यक्त करने की अपूर्व क्षमता। मैंने इन्हीं अनगढ अनुभूतियों को जीवन के रसातल से ढूँढ निकालने की चेष्ठा की है। इनमें कोमल कान्त भावनाओं के साथ जीवनानुभवों की कठोरता भी है, मेहनत-, संघर्ष का जुनून भी है तो आस्था और विश्वास की आभा भी विकीर्ण हो रही है, साथ ही जीवन-पथ के उजालों के साथ अंधेरे की खिड़कियों को खोलने का प्रयास भी किया गया है। मेरी कोशिश है कि इनमें प्रत्येक सहृदय पाठक और श्रोता अपने-अपने हिस्से का रस लेकर इसे साधारणीकरण की सीमा तक ले जाए।

टी0एस0 इलियट, राबर्ट फ्रास्ट और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आत्मा की मुक्तावस्था कहकर मुक्ति की साधना के लिए जो

शब्द–विधान कराया है लगभग उसी आवरण में मुक्ति का प्रयास इन क्षणिकाओं में किया गया है। ये संवेदनाएं किसी व्यक्ति–विशेष की नहीं है, अपितु इनमें समाज के संपूर्ण प्रतिबिम्बन का प्रयास किया गया है। रिश्तों की गर्माहट को महसूस करके इनमें विश्वास के धागों से जिस बुनावट की कोशिश की गई है वस्तुतः आज उसकी आवश्यकता ही नहीं वरन् उसकी खोज भी आरम्भ हो चुकी है। इसका प्रत्यक्ष कारण यह है कि प्रत्येक मानव अपने आप से टूट चुका है और उसके इस खालीपन का उत्तर उसे बाहर नहीं अपितु अपने अंदर ही खोजना है। यह टूटन हम सबकी है। रिश्तों की हम सभी को आवश्यकता है या ये भी कह सकते हैं कि जिन्दगी इनके बिना चल ही नहीं सकती। मैंने महसूस किया है कि विश्वास की परिधि में ही संबंधों के बीज बोए जा सकते हैं। इन क्षणिकाओं में भी विविध रंगी बीजों ने अपना पल्लवन सुनिश्चित किया है।

आज हमारे जीवन से आनन्द सूख–सा रहा है और यह प्रक्रिया सतत् गतिमान है। मेरा प्रयास रहेगा कि हम इस प्रवाह को रोक सकें। इस महायज्ञ में हम सभी अपनी–अपनी समिधाओं से अपना बचाव कर सकते हैं। मूलतः साहित्य का भी यही दायित्व है। वह एक ओर हमें अनुशासित करता है तो दूसरी ओर हमें जीवन का शिष्टाचार भी सिखाता है। अपने भीतर के सौन्दर्य और गहराई को निहारने की एक अनूठी प्रक्रिया इन क्षणिकाओं में निरन्तर प्रवाहमान है, साथ ही यह प्राणों की ऊर्जा के अपव्यय का समापन भी करती है। क्षणिकाओं के संदर्भ में यह मेरा पहला प्रयास है। जीवनानुभूतियों के लघुत्तम कलेवर को मैंने इस प्रकार परोसने का प्रयास किया है कि उनकी कसावट को प्रत्येक सहृदय अनुभव कर सके। यूँ भी संबंधों के संबंध में अपने ही धागों से बुनावट करनी होती है। शर्तों पर तो अनुबंध किए जा सकते हैं, जीवन के लिए तो ईमानदारी ही पर्याप्त है।

यथा–

''रिश्ते निभाने के लिए
कहाँ कसमें खानी पड़ती हैं
कहाँ शर्तें रखनी पड़ती हैं भारी
रिश्तों में होनी चाहिए
बस ईमानदारी, विश्वास
और समझदारी।''

ये क्षणिकाएं जैसी हैं बिल्कुल अपने जैसी हैं। धीरज इनका ध्रुव बिन्दु हैं और उनमें व्यक्तित्व का ठहराव एकनिष्ठ स्वयं में तल्लीन लगभग अनियारे जीवन की संवेदनात्मक अनुभूति हैं। आशा है पाठकवृन्द को मेरी अनुभूतियाँ अच्छी लगेंगी, इन पर अपनी संवेदनाओं की मुहर लगाना अब आपका दायित्व है।

सद्भाव के संग,

रमेश पोखरियाल 'निशंक'

अनुक्रमणिका

1. मेरे शब्द –13
2. रिश्ते –14
3. दोस्ती –15
4. हिफाजत से रखते हैं –16
5. स्वप्निल गीतों को –17
6. हार नहीं मानूंगा –18
7. मधुमास –19
8. तुम्हारे खातिर –20
9. वजह –21
10. यादों को –22
11. मुस्कुराने के लिए –23
12. राज –24
13. जिनके मिलने से –25
14. सौम्य –26
15. दूसरों के लिए बने हैं –27
16. तुम्हारे सौदे –28
17. खुशियों की बरसात –29
18. बयार –30
19. सृजन –31
20. खूबसूरत विचार –32
21. कसम –33
22. अमृत रस –34
23. भूल से भी –35

24. कुछ यादें –36
25. प्यार में ताकत –37
26. पार्थ चाहिए –38
27. अधिक निकट –39
28. एक दिन तो –40
29. बदली बनकर –41
30. तोहफा –42
31. आ रहा हूँ –43
32. तुम्हारी बाहों में –44
33. चरम लक्ष्य –45
34. मेहनत –46
35. तम हटाने गम मिटाने –47
36. विश्वास –48
37. प्रयास –49
38. रहस्य –50
39. दिया हूँ –51
40. सोच –52
41. पहचान –53
42. बोलने दो –54
43. सपेरा –55
44. गिद्ध –56
45. पत्थर के बने –57
46. पैसो के रिश्ते –58
47. खामोशियां –59
48. कई सबक सिखाये –60
49. हौसला –61
50. जुनून –62
51. उस इंसान की पहचान –63
52. फर्क –64
53. पहले –65
54. अपना रास्ता –66
55. भूल पर धूल –67
56. मायूस –68
57. जो मजबूत होते –69
58. नहीं हो सकता –70
59. नहीं बुझा करते हैं –71
60. सच्चाई –72
61. सोच –73
62. तन और मन –74
63. अहंकार –75
64. राज खोलेंगे –76
65. सच का आनंद –77
66. कामयाबी का जुनून –78
67. भागा–दौड़ी –79
68. मुझी में –80
69. औरों के भी –81
70. धन या ज्ञान –82
71. सबक –83
72. चुभन –84
73. जानबूझकर –85
74. आसमा छूने वाला –86
75. नया इतिहास –87
76. जिंदगी का उपहार –88
77. हर कदम पर –89
78. पहल –90
79. जज्बा –91

80. भरोसा कहाँ छूट रहा -92
81. लक्ष्य शिखर -93
82. मुस्कराओ -94
83. भरोसा उन पर -95
84. मेरी चाह -96
85. घिरा हुआ -97
86. सन्तुष्टि -98
87. ईर्ष्या -99
88. तिनका-तिनका -100
89. परछाई -101
90. मोह -102
91. धरती -103
92. कायरता -104
93. गुस्सा -105
94. नफरत के लिए वक्त -106
95. स्वयं रोकता है -107
96. एक बार मरना -108
97. आक्रोश -109
98. मेरी चुप्पी -110
99. खूबसूरत -111
100. कुछ तो बोलो -112
101. सदा के लिए नहीं -113
102. प्रेम से -114
103. अन्धेरा जा रहा है -115
104. आनंद -116
105. सुख का अहसास -117
106. सबसे बड़ी भूल -118
107. मैं ही हूँ -119
108. मनुष्य -120
109. चाह से ज्यादा -121
110. तुम्हारी पीड़ायें -122
111. मृत्यु -123
112. मरना अच्छा है -124
113. कैसी रीति -125
114. हर कदम पर -126
115. मोहताज है -127
116. ऐसा न करो -128
117. फेरबदल -129
118. हड़ताल -130
119. नहीं आता नजर -131
120. बद्दुआ -132
121. कभी नहीं -133
122. केवल बातें -134
123. खेल निराला -135
124. शक्ति का स्वरूप -136
125. दीपक -137
126. क्या होता है -138
127. जीवित रहेंगी -139
128. क्रूरता -140
129. अभागा -141
130. जो जैसा, वैसा ही -142
131. बिना मौत -143
132. कर्तव्य की गूँज -144
133. सफलता -145
134. खूबसूरत रचना -146
135. देख सको तो -147

136. इल्जाम —148
137. दीप —149
138. व्यथित बाधायें —150

मेरे शब्द

मुझे विश्वास है कि–
मेरे शब्दों में भरे भाव
सुप्त पड़े नीरस जीवन में
जीने की अलख जगा देंगे
सोये–सोये से खोये मन में
कुछ करने की ललक जगा देंगे।

रिश्ते

रिश्ते निभाने के लिये
कहाँ कसमें खानी पड़ती हैं
कहाँ शर्तें रखनी पड़ती
है भारी।
रिश्तों में होनी चाहिये
बस, ईमानदारी, विश्वास
और समझदारी।

दोस्ती

दोस्ती बड़ी नहीं होती है
निभाने वाला बड़ा होता है,
दोस्ती कर, नहीं निभा सकने वाला
हमेशा चौराहे पर रोता है।

हिफाजत से रखते हैं

न भूले हैं
न भूल सकते हैं
उनकी यादों को
हम बहुत हिफाजत से रखते हैं,
पर
क्षण है कई जिंदगी के
जो आंधियों की तरह आते हैं
परेशानियों की दीवार खड़ी कर
मन में
एक तूफान मचा जाते हैं।

स्वप्निल गीतों को

अजर-अमर स्वप्निल गीतों को
मैं कहीं नहीं खोने दूँगा,
बस्ती-बस्ती अलख जगा मैं
विद्वेष नहीं बोने दूँगा।

हार नहीं मानूंगा

जानता हूँ यह होगा निश्चित
मधुमास जरूर लाऊँगा मैं
अपना सर्वस्व समर्पित कर
हार नहीं मानूँगा मैं।

मधुमास

वास अगर करते हो मुझमें
मेरा भी वास स्वतः होगा,
फिर सृजित होगा जो पल-पल
वही मधुमास स्वयं होगा।

तुम्हारे खातिर

जुल्म तो हम पर भी
कम नहीं ढाये जमाने ने
पर हम फिर भी
तुम्हें याद कर जीते रहे।
कितना कुछ नहीं जहर घोला
मेरी हर राह में किस-किस ने
पर होंठों को सिये हम
जहर भी पीते रहे।

वजह

यादों की मीनार बनकर
मरने-बिछुड़ने पर भी
सम्बंधों को नहीं खोते हैं।
जो जिंदगी जीने की
वजह बन जाते हैं
कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं।

यादों को

भूले नहीं हैं कभी
एक क्षण भी
तुमसे किये वादों को,
हमने कहाँ-कहाँ
और कैसे- कैसे
छुपाकर रखा है
तुम्हारी यादों को।

मुस्कुराने के लिए

जिंदगी में मुस्कराने की
कोई वजह तो चाहिए
भीड़ में तो हंसना पड़ता है
लेकिन दिल में खुशी
की वजह तो चाहिए।
तस्वीरों में खुश दिखना
आसान है मगर
हकीकत में जिंदगी
गुदगुदानी तो चाहिए
हंसती खेलती जिंदगी ही
जीने का दूसरा नाम है
निराश लोगों का रोकर चले जाना
उनकी जिंदगी का अंजाम है।

राज

आंसुओं के निकलने
का भी
अपना एक अलग अंदाज है
कब खुशी में निकलें
और कब गम में बहें
यही तो एक गहरा राज है।

जिनके मिलने से

जिनके मिलने से
जिंदगी में खुशी मिलती है
ढूँढने से भी
वो बहुत ही कम मिला करते हैं।
जिनकी मेहनत से
मुरझाई कली भी खिलती है
दु:ख-दर्दों में भी
बस, उन्ही के चेहरे तो खिला करते हैं।

सौम्य

सौम्य की गहराई
अनबुझे सवालों का
खामोश जवाब देती है,
शांत होकर बिना कुछ कहे
हर दु:ख-दर्द
सीने में समा लेती है।

दूसरों के लिए बने हैं

जो दूसरों को
खुशी देने के लिए बने हैं
वो तो सदाबहार होते हैं।
वो न किसी को जिंदगी
खोने देते हैं
न स्वयं की जिंदगी खोते हैं।

तुम्हारे सौदे

तुम्हारे सौदे भी
कुछ अजीब होते हैं,
ये भी किसी-किसी का ही
नसीब होते हैं।
तुम बस एक छोटी सी मुस्कराहट
देते हो,
और हमें
जिंदगी भर के लिए
अपना बना लेते हो।

खुशियों की बरसात हो

तुम हमेशा खुश रहो,
सफलता की हो बयार
उसमें बहो।
दूर तक भी
कभी दु:ख की न छाँव हो,
जहाँ हो
बरसात खुशियों की
वह
सुन्दर-मनोहर
मनभावन तुम्हारा गाँव हो।

बयार

ये फूलों का गुलदस्ता
तुम्हारा जीवन महकाये,
हर पंखुरी बन बयार सुगन्ध
जल–थल–नभ में छाये।

सृजन

तुम साथ चलो साथी
तो मेरा भी
शिखर छूने का मन होगा,
एक नया संसार,
एक नई मंजिल होगी
और नवयुग का सृजन होगा।

खूबसूरत विचार

जिंदगी हसीन है
इसे खूब प्यार करो
इसी पर जियो
और दूसरों के लिए मरो।
ये जिंदगी
एक नया अहसास
देती है तुम्हें
तुम आँखे बंद कर
एक लम्बी श्वांस
तो भरो,
जिंदगी जीने का
खूबसूरत विचार तो करो?

कसम

जिंदगी ने
अब खुशियों को
पुकारा है,
अब तो पूरी दुनियां को
बाहों में समाने का
ख्वाब हमारा है।
फूलों को
महकाने की
कसम खाई हैं हमने,
अब तो
कांटों ने भी
हमारा दामन सम्भाला है।

अमृत रस

संभालना बड़े पेड़ को
छोटी–छोटी जड़ों की
जिम्मेदारी है।
छोटी–छोटी जड़ों की
इस पेड़ के परवरिश में बहुत
भागीदारी है।
इसी अमृत चैतन्य से
जीवन का नवांकुर फूटता है
और जड़ों की मजबूती से
वह तेज आँधियों में भी नहीं टूटता है।

भूल से भी

बदनाम न हो आँसू
तुम चुपचाप उसे
दामन में छिपा लेना
भूल से भी
अगर याद आऊँ मैं
तो मिलने की दुआ करना।

कुछ यादें

कुछ यादें
मुस्कराहट के साथ
आंसू भी
दे जाती हैं।
कुछ यादें
अतीत से वर्तमान के धरातल पर
ले आती हैं।

प्यार में ताकत है

प्रेम में बहुत ताकत है
समझ सको तो समझना
इसकी असीम शक्ति को
आत्मा में महसूस करना
प्रेम में ही ताकत है
पूरी दुनियां को झुकाने की
वरना क्या जरूरत थी कृष्ण को
अपने आंसुओं से सुदामा के
पग पखारने की।

पार्थ चाहिए

जिंदगी के सफर में
हमें सबका साथ चाहिए
डगमगाती राहों में संभलने के लिए
एक दूसरे का हाथ चाहिए।
यूँ तो कट जायेगी जिंदगी
जंगल में अकेले भटकते हुये
किन्तु सही राह चलने के लिए
हर एक को अपना पार्थ चाहिए।

अधिक निकट

हम यों ही
एक दूसरे को देखते रहें
हम एक दूजे की भावनाओं में
मिलकर बहें......
तब एक नया सवेरा आयेगा
जो हमारे अधरों पर
मधु मुस्कान लायेगा।

फिर हमारे गम और
खुशी भी एक हो जायेगी
जिनकी अनुभूति हमें
अधिक निकट लायेगी।

एक दिन तो

कोई भी गम क्यों न हो
बस मुस्कराते रहो
दुनियां में जितने भी कष्ट हों
सब हंसकर सहो,
एक दिन अंधेरे ने तो जाना ही है
और मुस्कराओ
नई सुबह को तो आना ही है।

बदली बनकर

फिर बहार बनकर आ,
मेरे जीवन में प्रकाश बनकर छा
अंधेरा बनकर गुमनामी
में न खो जाना,
हरियाली की जगह
तू पतझड़ न लाना,
प्यासी है सारी धरती यहाँ
तू बदली बन
इसकी तपन बुझाना।

तोहफा

जुड़ना तो बहुत सरल है।
पर चुनौती है आजीवन जुड़े रहना
उस साथ का विश्वास बन
निरन्तर आगे बढ़ते रहना।
यही तो जिंदगी की
छोटी-छोटी बातों का फलसफा है
खुशियों भरी जिंदगी
इसी साथ से मिला तोहफा है।

आ रहा हूँ

मैं किश्ती बनकर
तुम्हारे पास आ रहा हूँ
मैं तुम्हारे लिये
आशा की एक
किरण ला रहा हूँ
तुम्हें मैं डूबने नहीं दूँगा
अपने प्राण देकर
ईश्वर से इतना तो वचन
ले ही लूंगा।

तुम्हारी बाहों में

आँखें बंद कर अपने ईश्वर का
एकाग्र मन से आह्वान करो
उसके दिव्य स्वरूप को मन में बसा
उसे आत्मा की गहराइयों से प्यार करो
तुम्हें महसूस होगा कि तुम
बढ़ रहे हो खूबसूरत सी राहों में
आँखें खोल के पाओगे तुम
उजली सी दुनियां को अपनी बाहों में।

चरम लक्ष्य

उसके साथ
नित्य सम्बंधों की स्मृति
अभिन्नता और आत्मीयता
को पैदा करती है
और
आत्मीयता!
उस अनन्त में
प्रेम को भरती है
यही प्रेम तो
जीवन का चरम
लक्ष्य है।

मेहनत

मेहनत करने वालों को कभी
बाधाएं रोक न पाती हैं,
जिधर कारवाँ चलता मेहनत का
वहीं 'सफलता' आती हैं।

तम हटाने गम मिटाने

मुझको इसका नहीं है गम
फैला है यदि भीषण तम
मैं निज को ही तपा-तपाकर
नई रोशनी लाऊँगा,
धरती से तम हरने को
मैं दिग-दिगन्त में जाऊँगा,
धरती के कण-कण, जन-जन हित
मैं गीता को गाऊँगा,
खुशियों की हो बरसात जहाँ
ऐसी एक दुनिया बसाऊँगा।

विश्वास

जिसको हो विश्वास स्वयं पर
किस्मत उसी की जगती है।
अनवरत अभ्यास और कठोर प्रयास
किस्मत बदल सकती है।

प्रयास

ये सच है कि सफलता
रहती 'प्रयास' की प्रतीक्षा में
वही प्रयास होता फलीभूत
जो बसता है दृढ़ इच्छा में।

रहस्य

अपनी ही मेहनत इंसान की
सोई किस्मत जगाती है,
और स्वयं की सोच, प्रगति का
अद्‌भुत रहस्य बताती है।

दिया हूँ

दिया हूँ मैं जल रहा हूँ
हर अंधेरे को मिटाने,
पर हवा का जुल्म देखो
आ रही मुझको बुझाने।

सोच

आदमी की सोच
दुनियां की भीड़ से
उसे अलग करती है,
'अच्छी सोच'
हमेशा जिंदा रहती है
जिस पर दुनियां मरती है।

पहचान

हाँ!
हर इंसान की आवाज
उसकी पहचान है
और
उस आवाज में अच्छे बोल
उसका परिधान है।
जिसे सुनकर कोई भी
उसका अनुमान लगा सकता है।
इंसान!
अपनी वाणी और विनम्रता से
दुनियां ही क्या
क्षितिज के उस पार भी
छा सकता है।

बोलने दो

अपनी जुबान के पीछे
छिपा होता है हर आदमी
उसे दिल के दरवाजे खोलने दो
अगर समझना है,
उसका चरित्र
तो उसे कुछ बोलने दो।

सपेरा

अब सपेरा भी दुःखी हो
साँपों को पालने से
बचने लगा है,
क्योंकि अब सांपों की जगह
आदमी ही आदमी को
डंसने लगा है।

गिद्ध

अपनी नियति से
स्तब्ध मानस होने लगा है
गिद्ध भी सब देख ये
रोने लगा है।
सोचता है,
आया हूँ क्यों जमीं पर
जब इन्सान ही इंसान को
नोचने लगा है।

पत्थर के बने

सुना तो है कि यह शरीर
मिट्टी का बना है
एक दिन
मिट्टी में ही मिल जायेगा,
इन्सान खाली हाथ आया है
खाली हाथ जायेगा।
किन्तु जीवन के इस सफर में
ऐसे भी संयोग मिले
मिट्टी के तो नहीं वरन्
पत्थर होते भी लोग मिले।

पैसो के रिश्ते

अभिमान था उसे
पास रहता था जब पैसा
पर समय के झंझावातों से
सब रिश्ते-नाते रिस गये,
जेब में जब सुराख हुआ
पैसों के साथ ही सब
रिश्ते भी सरक गये।

खामोशियां

अपनी बातों को छिपाया
खामोशियों में रहकर
अपना गम छिपाया
अपने ही दिल से कहकर।

कई सबक सिखाये

सिखा न सकी जो
पूरी उम्र भर ये किताबें मुझे,
मैंने हर चेहरे पर नजर डाली
तो हर एक में ग्रन्थ नहीं
महाग्रन्थ नजर आये मुझे ।
इन चेहरों ने मुझे
जमीं की हकीकत को बताया है,
इन्हीं चेहरों ने मुझे
जीवन में बहुत कुछ दिखाया है
इन चेहरों ने मुझे जीवन के
कई पाठ पढ़ाये हैं।

हौसला

हमेशा आपके पास रहकर
ये हौसला आपको बढ़ाता है
जो आपके मन में है
उसे हर हाल में करवाता है।

जुनून

जुनून ही आपसे
हर काम करवाता है,
जुनून ही दौड़ना सिखाता है
जुनून ही उछालें
भरवाता है।
मन इच्छा और जुनून का
एक अनोखा नाता है
जो आप कर नहीं सकते
उसे जुनून
आपसे करवाता है।

उस इंसान की पहचान

न जात का ना पात का
न रंग का न भेद का
न वर्ग, वर्ण हैं कहीं
न ऊँच-नीच है कहीं
आदर्श रस्मरीत है
मधुर मिलन की प्रीत है
ईश्वर की दी ये जिंदगी
सभी यहाँ मन मीत हैं।
अनेकता में एकता का
प्रेम का जहान है
इन्सानियत पे मर-मिटे
इन्सान वो महान है।

फर्क

अगर तुम्हें कोई
छोटा नजर आता है
तो तुम्हारी नजरों में ही
कुछ तो फर्क जरूर है
हर व्यक्ति स्वयं में है विशिष्ठ
तुम्हें किस बात का गुरूर है?
खजूर की तरह ठूँठ सा लम्बा
जीवन भी क्या जीना है,
तन पर पहने लिबास को
सब्बल ने नहीं, सुई ने ही सीना है।

पहले

ऊँचे उद्देश्य रखो
धैर्य धरो
हर क्षण है कीमती
इन क्षणों का महत्व समझो
कुछ करने से पहले
आत्म चिंतन करो
और फिर–
अपनी सोच को अंजाम देने के लिए
आत्म विश्वास की उड़ान भरो।

अपना रास्ता

दूसरों को सीख देने वाले
स्वयं अधर में लटक जाते हैं
दूसरों में दोष ढूँढने वाले
खुद अपना रास्ता भटक जाते हैं।

भूल पर धूल

भूल पर धूल डालना
खराब होता है,
वह एक के बाद एक
तमाम समस्याओं को बोता है।
आदमी इस धूल में
अपनी ही शक्ल खो देता है।
चेहरे पर अगर धूल हो
तो शीशे का कोई
कसूर नहीं होता है।

मायूस

काबिल सपेरा भी
आस्तीन में छुपे
सांप को नहीं निकाल
पा रहा है।
इन्सान रूपी इन
आस्तीन के सापों का
विष न निकाल पाने
पर मायूस नजर आ रहा है।

जो मजबूत होते

जो मजबूत
मेहनतकश अपने
रास्ते में बढ़ा करते हैं
वे घोर आंधियों से भी नहीं डरते हैं
जिनकी जड़ें
गहरी और गहरी होती है।
वह बड़े से बड़े तूफानों
में भी नहीं हिला करते हैं।

नहीं हो सकता

अपने को जिंदा रखने वाला
दुनियां की भीड़ में
खो नहीं सकता।
उसे
मंजिल न मिले
ऐसा हो ही नहीं सकता।

नहीं बुझा करते हैं

अंधेरा मिटाने
जो स्वयं
मशाल बन जला करते हैं,
विपरीत आंधियों में भी
वो कभी नहीं बुझा करते हैं।

सच्चाई

सच छुपाना
मुश्किल नहीं
नामुमकिन है,
तुम किसी को
चाहे करो बदनाम।
लगाओं झूठे इल्जाम
पर एक दिन तो
सच्चाई सामने आती है,
षड़्यंत्रकारियों को
अपनी ही करतूत से
फिर मूँह की खानी है।

सोच

छोटी सोच
आदमी को छोटा करती है
हर स्तर पर
आदमी में संकीर्णता भरती है।
यह तमाम प्रकार की
शंकाओं को जन्म देती है,
लेकिन जब सोच बड़ी होती है
तो वह सब समस्याओं का
समाधान होती है।

तन और मन

केवल तन का गोरा होना ही काफी नहीं
जरूरी है
मनुष्य का
मन भी गोरा हो,
कलुषता की
न हो कालिख
और दिल का हर कागज
कोरा हो।

अहंकार

'मैं सर्वश्रेष्ठ हूँ'
यह तो आत्म विश्वास हो
सकता है,
पर 'केवल मैं ही हूँ सर्वश्रेष्ठ'
यह कहने वाला
कभी बड़ा नहीं हो सकता
इस अहंकार के कारण,
केवल और केवल
अपने लिए रोता है
हर चौराहे पर वह
सिर्फ अकेला होता है।

राज खोलेंगे

आदत नहीं है
पीठ पीछे वार करने की
आदत नहीं
वेवजह किसी से तकरार करने की।
हम तो
जो बोलेंगे सामने ही बोलेंगे
परहित में हम
छुपे राज नहीं खोलेंगे।

सच का आनंद

सच का अपना आनंद है
इसमें जीवन जीने की उमंग है
थोड़ी कठिन राह है किन्तु
इसमें उत्साह और निष्ठा के रंग हैं,
यहीं से आत्मा की
पवित्रता शुरू होती है
जो तमाम कलुषितता को धोती है।

कामयाबी का जुनून

कामयाबी का तो
जुनून होना चाहिए
मुश्किलें तो
दुबक जायेंगी कोने में,
मुश्किलों से यदि
घबराओगे तो जिन्दगी
कट जायेगी रोने में।

भागा–दौड़ी

जिदंगी की भागा–दौड़ी में
जाना कहाँ है
किसी ने ना जाना,
क्षणिक मौहलत है
दो दिन की
किसी ने न माना।

मुझी में

मुझ में है मन भी
तन भी मुझी में,
उत्साह भी है
तो गम भी मुझी में।
डगर भी मुझी में
सफर भी मुझी में,
दुनियाँ भी मुझी में
हर मंजिल भी मुझमें,
परेशान हूँ क्यों?
जब सबकुछ है मुझमें।

औरों के भी

उगते सूर्य की तरह
तेज तो बढ़ाना पड़ेगा
उसे बढ़ाने के लिए
स्वयं को तो तपाना ही पड़ेगा।
सूर्य के तेज में
तुम केवल अपने को देख सकोगे,
अपने अंदर
की रोशनी से तुम
औरों के अंधेरे भी
मिटा सकोगे।

धन या ज्ञान

केवल धन को कमाना
और उसकी रक्षा में
जिन्दगी को खपाना
जिन्दगी से मुँह मोड़ना है।
योग्य बनों
तुम्हें तो जिंदगी में हर पल
एक नई उपलब्धि जोड़ना है।
तुम्हें ज्ञान को कमाने
व उसकी रक्षा की जरूरत नहीं
ज्ञान तुम्हारी रक्षा करेगा
तुम चाहे रहो यहाँ या कहीं।

सबक

यदि गलतियों
से सबक सीखा तो
तुम निखरकर
लौट आओगे
और सबक न
सीखा तो
बार-बार गलतियाँ
कर
हर कदम पर बुरी चोट
खाओगे।

चुभन

चुभन को महसूस करो
वह तुम्हें
सजगता देगी
सामर्थ्यवान बनाकर यह
तुममें समर्पण पैदा करेगी
यह चुभन तुम्हें
शक्तिशाली बनायेगी
विकट परिस्थितियों में यह
मुकाबला करना सिखायेगी।

जानबूझकर

गलती
जो मन को पीड़ा दे
उसे जानबूझकर
कैसे किया जा सकता है?
उन गलतियों के बोझ तले
जीवन ढोकर कैसे जिया जा सकता है?

आसमां छूने वाला

कपट से संसार का कभी भी
और कोई भी
महान कार्य नहीं होता,
जमीं पर खड़ा आसमाँ
छूने वाला कभी अपनी
जमीं नहीं खोता।

नया इतिहास

पसीनों की बूदों से जो
इरादों को अपने लिखते हैं,
वही अपने हाथों में बनी
लकीरों को बदल सकते हैं।
ईर्ष्या और स्वार्थ के व्यूह को
जो विवेक से अपने भेदते हैं।
ध्वस्त कर हर विघ्न को
सफलता की मीनार चढ़ते हैं।
निज मन में जो संकल्प कर
चुनौतियों की राह बढ़ते हैं।
वो ही किस्मत के पन्नों में
नया इतिहास रचते हैं।

जिंदगी का उपहार

न देख सकूँ तुम्हें
मन में तो बसाया है
हर स्पन्दन, हर तड़प
हर सुख-दुःख में तो पाया है।
मिले तो कल्पना साकार हो
प्यार का उमड़ता संसार हो,
एक युग से गुनगुनाता हूँ जिसे
वह गीत जिंदगी का सबसे बड़ा
उपहार हो।

हर कदम पर

जो जितना बड़ा हुआ
उसके सामने
उतनी बड़ी परीक्षाएं रही हैं।
हर तरफ तूफान
हर पग में काँटे
हर कदम पर उसने तो
यातनाएं ही सही हैं।

पहल

दोस्त!
दीवाने तो हम भी कम नहीं थे तेरे
तुम्हें क्या मालूम कि यह तो
न जाने कब से
सोचा था हमने।
पर हाथ आगे बढ़ाकर
जीत हासिल की तुमने।

जज्बा

हौसलों के आगे
परदा नहीं होता
कड़े परिश्रम का कोई
विकल्प नहीं होता
दिल में हो जज्बा कुछ
कर दिखाने का
तो जलते दिये को भी
आंधियों का डर नहीं होता।

भरोसा कहाँ छूट रहा

हर चौराहे पर खड़ा है क्यूँ डर
ये कौन लुटेरा लूट रहा
बढ़ते आगे पर पीछे-पीछे
ये क्यूँ भरोसा टूट रहा।

लक्ष्य शिखर

अंतिम श्वास तक भी
डरने का कोई मतलब नहीं,
तुम बढ़ो तो सही
तुम्हें तुम्हारा लक्ष्य शिखर मिल जायेगा।
तुम्हारी उपेक्षा करने वाला
वहीं रह जायेगा
वह ईर्ष्या और जलन के
सिवाय कुछ नहीं पायेगा।

मुस्कराओ

मुस्कराओ
जिन्दगी को भी मुस्कुराने दो,
इसका एक पल भी
व्यर्थ न जाने दो
इस जीवन में खुशियों का
हर मौसम आने दो।

भरोसा उन पर

उनका भरोसा क्या करना
उनके लिए भी क्या मरना
जो वक्त के साथ बदलते हैं
भरोसा और विश्वास
उस पर करो
जिनका खयाल
तब भी वैसे ही रहता है
जब आपका वक्त बदलता है।

मेरी चाह

मेरी हर धड़कन में
धड़कती रहे इन्सानियत
मेरे अन्दर एक खुबसूरत इन्सान हो।
चाह है इस जिंदगी की
देश पर कुर्बान हो
मेरी ये जिंदगी
इन्सानियत की
पहचान हो।

घिरा हुआ

खुद तो हर क्षण कुचला हूँ मैं
संघर्षों से घिरा हुआ
कौन था अपना, कौन पराया?
था दु:ख-दर्दों से पिरा हुआ।

सन्तुष्टि

सुनो!
जो तुम्हारे पास है
उसे मिल बांटकर खाओ,
अपनी आत्मा की
संन्तुष्टि
और हर इंसान को सुखी
पाओ।

ईर्ष्या

जैसे गेहूँ को घुन खाये
जैसे कपड़ों को कीड़े
वैसे ही ईर्ष्या आदमी को
दीमक के सम खाती है
यह ईर्ष्या नासमझ को
खोखला कर जाती है।

तिनका-तिनका

यूं ही नहीं मिलती मंजिल
जुनून जगाना पड़ता है
जीवन-मरण के जज्बे को
हृदय से लगाना पड़ता है।
कई उड़ान भर कर चिड़िया
अपना घोसला बनाती है
उसका जज्बा देखो वह
चोंच से तिनका लाती है।

परछाई

जब तक उजाला है तुम्हारी जिंदगी में
सारी दुनियां तुमसे अपने को जोड़ती है,
वरना अंधेरे में तो परछाई भी
अपना साथ छोड़ती है।

मोह

मोह व्याधि है,
रोग है,
शोक है
मोह तन का ही नहीं
मन का भी दुश्मन है।
जो मानव को दुर्बल कर देता है,
यही मोह
अनेक व्याधियों को जन्म दे,
जिन्दगी का
सुख चैन छीन लेता है।

धरती

जब तक जुड़े रहते हैं
पांव धरती से
ये धरती राह बनाती है।
पर यदि
जमीन छोड़ दे कोई तो
उसको धरती पर
खड़े होने की
जगह भी नहीं मिल पाती है।

कायरता

परिवर्तन से डरना
और
संघर्ष से घबराना
हमेशा ही कायरता है।

गुस्सा

ये गुस्सा भी तो
माचिस की तिल्ली
की तरह है
जो दूसरों को
बरबाद करने से पहले
स्वयं को
खाक में मिलाता है।
अपने आप
मिटने पर
धू-धू चिल्लाती है,
और सदियों तक
पीढ़ियों को रूलाती है।

नफरत के लिए वक्त नहीं

मेरे पास वक्त नहीं है नफरत के लिए
न मेरा ऐसा मन है।
जो नफरत करते भी हैं मुझसे
मेरा तो उनसे भी अपनापन है।
मैं व्यस्त हूँ उन्हीं में
जो लोग मुझे बेइंतिहाँ प्यार करते हैं
जो हमेशा नफरत करने से डरते हैं
हम भी हमेशा उन्हीं पर मरते हैं।

स्वयं रोकता है

अपने कर्मों का सुख–दु:ख तो
हर इंसान स्वयं ही भोगता है
कमजोर पड़ती कडियाँ और
विपरीत आंधियों को
वह स्वयं ही रोकता है।

एक बार मरना

मरना
सबको है यहाँ
बार–बार नहीं
एक बार मरना है,
और जब मरना है ही
तो फिर जिंदगी में क्या डरना है।

नासमझी में तो मनुष्य
रोज न जाने क्यों
तिल–तिल मरता है
हताश–कभी निराश
कदम–कदम पर डरता है।
तुम्हें
न हताशा में न निराशा में
बस
जिंदा दिली में जीना है
तुम
जीवन दे पाओ औरों को
बस
अमृत ऐसा पीना है।

आक्रोश

जिसमें जितना दर्द है
वह उतना खामोश है,
बाहर दिखती शांति बहुत
अंदर तो बहुत आक्रोश है।

मेरी चुप्पी

मेरी चुप्पी को तुम
यों ही न समझना
मेरी सरलता को
कायरता न समझना,
मेरे मन में उमड़ते
बहुत से खयाल हैं,
मेरी चुप्पी में भी
तुम्हारे लिए बहुत से
सवाल हैं।

खूबसूरत

आह! कितनी खुबसूरत
है स्वर्ग सी ये जिन्दगी,
किन्तु
थोड़ी से चूक हुई तो
नरक बन जाती
है जिन्दगी।

कुछ तो बोलो

क्या हो गया तुम्हें
तुम कुछ तो बोलो
चुप क्यों हो
एक क्षण के लिए ही सही
जुबान तो खोलो।

मचती है हलचल
तो उसे मच जाने दो
मेहंदी की तरह कोई रंग है
तो उसे रच जाने दो।

सदा के लिये नहीं

तुम परेशान क्यों होते हो
सत्य का सूर्य तो
कभी अस्त नहीं हो सकता
उल्लू और चमगादड़ों
को प्रसन्न करने वाला
यह अंधेरा सदा के लिए
रास्ता नहीं रोक सकता।

प्रेम से

प्रेम की जागृति के बिना
अहम् नाश नहीं होता है
प्रेम बनकर प्रेरणा
जीवन में प्रकाश भरता है,
प्रेम में ही हारता
मानव प्रेम में ही जीतता है।

अंधेरा जा रहा है

देखो सामने
सच्चाई प्रकट करने वाला
सत्य का सूर्य
आ रहा है
और शरमाकर
निराशा की चादर ओढ़े
देखो अंधेरा जा रहा है।

आनंद

(एक)

आनंद
असीम है अद्वितीय है
अनबूझ है
सुन्दर है सुन्दरतम है।

सभी शून्य है
सम्मुख उसके
वह परम
परचम है।

(दो)

आनंद
सदैव वर्तमान है
भविष्य नहीं,
यह मन की गहराइयों
में ही मिलता है कहीं।

सुख का अहसास

केवल
सुख के बारे में
सोचते रहने से सुख नहीं आयेगा
न हीं तुम्हारे मन में पनपती
इच्छाओं की पूर्ति कर पायेगा
सुख का एहसास तो
कर्म करते हुये महसूस होता है।
और सुख की प्राप्ति अनंत में
पहुंचने की यात्रा पड़ाव से मिलता है।
तभी जीवनरुपी सुगन्धित
सुन्दर पुष्प खिलता है।
और उसकी खुशबू से
सारा संसार महकता है।

सबसे बड़ी भूल

इच्छाएं भी तो
स्वयं
पैदा होती है
कहाँ पूछकर
आती है किसी को ?

जीवन यात्रा में
इच्छाओं को
पकड़े रखना ही
सबसे बड़ी भूल है,
उन्हें परित्याग नहीं करोगे
तो यहाँ
हर कदम पर शूल है।

मैं ही हूँ

मैं ही आनंद हूँ
मैं ही परमानंद हूँ
मैं ही जीवन का सुरीला छन्द हूँ,
मैं प्रेम में प्रकाश में
पाताल में आकाश में
स्वयं की श्वास में
स्वयं की प्रश्वास में
मैं ही विनम्रता का प्रेम पुंज हूँ
मैं ही दिव्यता का शांतिकुंज हूँ।

मनुष्य

पृथ्वी जिसका आश्रय स्थल
अंतरिक्ष आत्मा है जिसकी
नभ छत का स्वरुप लिये है
प्रकृति स्वंय देह है उसकी
सृष्टि रचनाकर्ता है
त्रिदेव संरक्षण करते हैं
सुन्दर अद्‌भुत रचना है यह
मनुष्य इसको कहते हैं।

चाह से ज्यादा

श्रम की चोरी मत करो
काम करो,
और खूब करो।
बदले में चाह नहीं रही तो
चाह से ज्यादा मिल सकता है।

तुम्हारी पीड़ायें

तुम
स्वयं ही सुख की धारा हो
तुम स्वयं ही
दुनियां की बड़ी कारा हो
जब तुम्हारी
लालसाएँ घटने लगती हैं
तो तुम्हारी पीड़ाएँ
धीरे–धीरे
छंटने लगती हैं।

मृत्यु

मृत्यु निश्चित है
किसने रोका है उसे
एक न एक दिन तो
उसे आना ही है।
जो संसार में आया है
उसे वापस तो जाना ही है,
यही सदैव याद रखने से
तुम्हारा वर्तमान
सजीव रहता है,
राग द्वेष से मुक्त रहो तुम
यही तो जीवन कहता है।

मरना अच्छा है

धैर्यहीन
पुरूषार्थहीन
बेकार जन्म ही लेता है,
मूह मोड़े जो युद्ध समय में
जो याचक को दान न
देता है।
ऐसे संतति का
क्या करना है
उसके जिंदा रहने से
तो ज्यादा अच्छा मरना है।

कैसी रीति

संसार की
यह कैसी रीति है
करे कोई
भरना किसी को पड़ता है।

कैकई के हठ के कारण
राम को ही
वनवास भोगना पड़ता है।

हर कदम पर

अपनी सीमा में
कोई भी बात हमेशा शोभा देती है,
सीमा को पार करते ही
वही बात चैन छीन लेती है।

चाहे कितनी ही अच्छी
क्यों न हो वह बात,
पर खराब हो जाती है।
फिर तो हर कदम पर
परेशानी ही परेशानी लाती है।

मोहताज है

मोहताज है जो स्वयं के लिए
वह दूसरों की सहायता कैसे करेगा,
सहारा लेकर उड़ रहा जो आंसमा में
जरूर दूसरों को मारकर
वह स्वयं भी मरेगा।

ऐसा न करो

उफ!
तुम ऐसा न करो
जीवन में आती बाधाओं से न डरो
मेरे संघर्ष के रास्तों का
पता है न तुम्हें?
तो फिर राह में आती
इन मुश्किलों का
क्यों न डटकर
मुकाबला करो।

फेरबदल

जीवन में कुछ
फेर बदलकर तो देखो,
सिकी हुई इन रोटियों को
तुम फिर से न सेको।

हड़ताल

तुम्हारी संवेदनहीनता से
कई लोग मर रहे हैं,
तुम्हारे अहं की कीमत
कई लोग मर–मर के भर रहे हैं।

तुम्हारी हठधर्मिता और
तथाकथित बड़े बने रहने का
लोग दण्ड सह रहे हैं,
राह में पड़े पत्थर भी
तुम्हारी हकीकत को कह रहे हैं।

नहीं आता नजर

इधर कोई
उधर कोई
मगर अपना
कहाँ कोई,
यहाँ कोई
मुझे समझे
मुझे जाने, मुझे माने
नहीं आता
नजर कोई।

बद्दुआ

किसी को चाहते हो तो
दिल में खोजो
सिर्फ जुबान से
न बोलो,
गुस्सा भी करना है अगर तुम जबान
से करो,
पर किसी के लिए
बद्दुआ दिल में न भरो।

कभी नहीं

मत करो गुस्सा
ये वक्त है
जो हाथ से निकल जायेगा,
तुम फिर लाख कोशिश करोगे
तो यह वक्त कभी
फिर वापस नहीं आयेगा।

केवल बातें

कहो नहीं दूजे को बदलो
हम बदले तो जग बदलेगा,
चिंता-चिंता करो न केवल
हम सुधरे तो जग सुधरेगा।
त्याग-त्याग की केवल बातें
करने से क्या त्याग हुआ।
मन में हो संकल्प सुदृढ़ तो
जग से अनुराग स्वयं छलकेगा।

खेल निराला

कभी तो हताशा
कभी तो निराशा
दु:ख हैं असीमित, छाया कुहासा
अजब खेल हैं
निराले ये जग में
खुशियों के झोंके
कभी मिलते हैं पग में
ये जीवन का संगम है
आशा-निराशा
यहीं मिलती जीवन की
असली परिभाषा।

शक्ति का स्वरूप

इन्सान तुम इस सृष्टि में
ईश्वर का ही एक रूप हो
इस धरा पर तुम अलौकिक
शक्ति का स्वरूप हो।

दीपक

रवि बोला मैं रहूँ नहीं तो
फिर अंधियारा कौन मिटाए
कौन रोशनी देगा जग को
घोर तिमिर जब इस पर छाये
इसी प्रश्न के प्रत्युत्तर में
आशा की इक किरण जलाकर
दूर शांत एकान्त दीप ने
मन की बात करी थी उजागर
निराश न हो तनिक भी रवि तुम
मैंने अब दरवाजा खोला
जलने को हूँ मैं तत्पर
तुम बढ़ो सही यह दीपक बोला।

क्या होता है

अच्छा भी और बुरा भी
इंसान स्वयं ही होता है
पाता स्वयं पुरूषार्थ से
और अज्ञान से स्वयं ही खोता है।
कुछ भी कहाँ मिल पाता उसे
जो नींद गहरी सोता है
फूल कहाँ दिखेंगे उसको
जो कांटे स्वयं ही बोता है।

जीवित रहेंगी

सतत् प्रवाही, सत्य अभीप्सा
है यह हमारी
प्रतिपल स्वयं को खपाने की
अभिलाषा है प्यारी
पल-पल खपाके जो काम किया
उसकी स्मृतियां तो रहेंगी
हमारी संघर्षों की गाथाएं
तुमसे कुछ तो कहेंगी।

क्रूरता

आज घुसकर वह घरों में
एकता को तोड़ती है
कर रही खण्डित उसे
हर पल हमें जो जोड़ती है।
रौंदकर संवेदना को
कहर वो बरपा रही है,
क्यों बने बेखबर तुम
वह क्रूरता नित छा रही है।
हो चुका है बहुत अब
यूं मूक रह सकते नहीं
फैलती इस क्रूरता को
देख यूं सकते नहीं।
खत्म होती संवेदना हमें
हर हाल में बचानी है
क्रूरता को मिटाने की
आज हमने ठानी है।

अभागा

कुकर्मी से बढ़कर
दुनियां में
कोई अभागा नहीं होता,
विपत्ति में कोई साथ नहीं
मौत आने पर भी
उसका कोई अपना नहीं रोता।

जो जैसा, वैसा ही

जो जैसा सोचता है
वो वैसा खोजता है
ढूँढ में रहकर उसी की
वो वैसा ही होता है

इसलिए जरूरी है कि
हम अच्छा सोचें
जीवन में हरपल हम
अच्छा खोजें

इस खोज में तुम्हारा
व्यक्तित्व उत्तम हो जायेगा
सही दिशा और सही सोच से
दृष्टिकोण सर्वोत्तम हो जायेगा।

बिना मौत

परमेश्वर का प्यार
उन्हीं को मिलता है
जो परमेश्वर को प्यार करते हैं,
जो केवल
प्यार का दिखावा करते हैं
वो जिंदगी में प्यार के लिए
पल-पल तरसते हैं।

कर्तव्य की गूँज

सदाचारी के लिए
कठिनाई जरूर है
लेकिन मंजिल दूर नहीं होती,
वैसे ही
कर्तव्यपरायणों के
कर्तव्य की गूंज नहीं खोती।

सफलता

हर काम में
सफलता मिलेगी
तुम कुछ काम तो करो।
बहुत खूबसूरत होती है जिंदगी
तुम जिंदादिली से इसे तो जियो,
उदास, निराश, हताश होकर
ढोओ नहीं जिंदगी को यूँ ही
जुनूनी बनकर हर काम को
अंजाम तक पहुँचाओं तो सही।

खूबसूरत रचना

भगवान ने इन्सान बनाते समय
न जाने क्या-क्या सोचा होगा
इतनी सुन्दर रचना है यह
इसमें प्रेम भी भरा होगा
इन्सान में बसा यह प्रेम
दूसरों को जीवन दे जायेगा
और दूसरों में हर क्षण
यह स्वयं को पायेगा।

देख सको तो

देख सको
अगर अपने मन में
कोई चीज
तो देख लो,
वह तुम्हारे सामने
निश्चित आयेगी।
बस देखना ये है
कि उसे पाने के लिए
तुम्हारी मेहनत
किस सीमा तक जायेगी।

इल्जाम

अपने स्वार्थों के लिए उन्होंने
इल्जाम तो कम नहीं
बहुत कुछ लगाये हैं,
षड़यंत्र कर, जुल्म भी तो कम नहीं
बहुत कुछ ढाये हैं,
उन्होंने कोशिश तो बहुत की है
कुचलने की लेकिन
हमने तो हमेशा ही
अपने कदम बढ़ाये हैं।

दीप

मैं दीप हूँ जलता रहा हूँ
और मैं जलता रहूँगा,
आंधियाँ आती रहेंगी
किन्तु मैं चलता रहूँगा।

व्यथित बाधायें

मुझे रोकती ये बाधायें
व्यथित होकर कहने लगी हैं
कितना चलोगे यह बतलाओ
अब हम तो थकने लगी हैं।

मैंने कहा
अब तो समझ लो
इतने पर भी
अब तो संभल लो,
कोशिश करने पर भी तुम
मुझको रोक न पाओगे
मुझे रोकने की जिद में
तुम स्वंय खाक हो जाओगे।